

रुचि चिंतनना सांनिध्यमां

धर्म शुं कहे ?

गायत्री मंत्र अमारी साथे साथे

ॐ लूर्लुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं लर्गो- ।  
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अभिल विश्व गायत्री परिवार

<http://awgp.org>

<http://rushichintan.com>

## ધર્મ શું કહે ?

દેવીઓ અને ભાઈઓ,

દૃશ્યમાન જગતમાં રહેલી પ્રત્યેક વસ્તુને પોતાનો કોઈ ને કોઈ ગુણધર્મ હોય છે. આ ગુણધર્મને આધારે કોઈ વસ્તુની ઉપયોગિતા અંકાય છે. પૃથ્વીનો ધર્મ છે ઉત્પાદકતા તો પાણીનો ધર્મ છે શીતળતા. અગ્નિમાં પ્રખરતા જોવા મળે છે તો વાયુમાં વ્યાપકતા નદી પોતાના જળને સ્વચ્છ અને ઉપયોગી રાખવા માટે સતત ગતિશીલ રહે છે. વાદળાઓના નિર્માણ માટે અને પૃથ્વી પર વરસાદ વરસાવવા માટે સમુદ્ર પોતાના જળને સદા સમર્પિત કરતા રહેવાને પોતાનો ધર્મ માને છે.

વૃક્ષ ઘેરાયલાં વાદળોને વરસાવવામાં અને પર્યાવરણચક્રને સમતોલ રાખવાની જવાબદારી સતત નિભાવે છે. પ્રાણી વર્ગમાં પણ બધાં જ પ્રાણીઓ પોતાના વિશેષ ગુણધર્મને અપનાવીને રહે છે. આ ધર્મચક્રમાં ક્યાંક સહેજ પણ અવરોધ ઉત્પન્ન થઈ જાય તો સામૂહિક વિનાશની સ્થિતિ ઊભી થઈ શકે છે. તેથી જ એમ કહેવું ખોટું નથી કે આ જગત ધર્મના સિક્કાંતોના પાલન પર જે અવલંબિત છે.

મનુષ્યને સૃષ્ટિનું સર્વશ્રેષ્ઠ પ્રાણી માનવામાં આવે છે, પરંતુ સર્જનહારે તેની અંદરની ઈચ્છાશક્તિને પ્રબળ બનાવીને બે રસ્તા બનાવી દીધા છે. તેને એ બાબતમાં સ્વતંત્ર બનાવી દેવામાં આવ્યો છે કે તે ઇચ્છે તો અધોગામી પ્રવૃત્તિ અપનાવીને પશુતુલ્ય જીવન જીવે અથવા ઉર્ધ્વગામી જીવન પ્રવૃત્તિ અપનાવીને દેવોપમ અને સર્વશ્રેષ્ઠ જીવન જીવવાનું સ્વીકારે. તેથી વિવેકશીલતા જ મનુષ્યનો પરમ ધર્મ છે. આના આધારે તે સારાં નરસાંનો ભેદ પારખીને શ્રેષ્ઠતા અને મહાનતાના માર્ગ પર અગ્રેસર થાય છે. મનુષ્ય પોતાની વિવેકબુદ્ધિને આધારે જ જીવનનાં રહસ્યોને સમજે છે. શરીરનો પણ સ્વીકાર કરે છે. શરીર ઉપભોગ માટે મળ્યું છે, પરંતુ આત્મા આદર્શને જ અપનાવે છે. ઉપયોગ અને આદર્શ વચ્ચે સમતોલપણું જાળવવું તે જ ધર્મનું લક્ષ્ય છે. વિવેકની પરિણતિ છે. બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો સદાચરણ, આદર્શવાદી વ્યક્તિત્વ જ ધર્મનો પ્રયાય છે.

## ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

मानवज्जवनने देवोपम बनाववा माटे धर्मविशेषणो तथा महामनीषीओये अमुक सिद्धांतो, दर्शनो प्रतिपादित कर्थां छे. तेमणे ओवो मार्गो बताव्यो छे, जेनाथी मनुष्य वीजणीवेगे श्रेष्ठतानी दिशामां अग्रेसर थई शके छे. दरेक देश अने समाजमां आवी व्यक्ति थती आवी छे. ते बघाये घणुंभरुं ओक जेवा ज सिद्धांतो समग्र विश्वसमुदाय माटे रज्ज कर्थां छे. थोडी घणी विभिन्नताओ मात्र कर्मकांडने लगती छे. जे विभिन्न परिस्थितियों अने सामाजिक संरचनाने आधारे निर्धारित करवामां आवी छे. तमामनो मुख्य उद्देश ओक ज छे.

आजे संसारमां मुख्य अगियार धर्म अथवा धर्ममत छे. ते आ प्रमाणे छे - जापाननो शिन्टो मत, चीननो ताओ मत, चीननो ज कॉन्फ्यूशियस मत, हिन्दुस्ताननो वैदित मत, बौद्ध मत, शीख मत, पारसी मत, यहुदी मत, ख्रिस्ती मत तथा मुसलमान मत, इकीकतमां आ बघा ओक ज धर्म संदेशने विभिन्न रूपे समजाववानो प्रयत्न छे. आ बघा मत छे, स्वयं धर्म नथी. धर्म तो मूलतः मनुष्यना मनुष्यत्वमां, तेनी विवेकशीलतामां समायेलो छे. धर्मनो वास्तविक अर्थ छे - कर्तव्यनिष्ठा, उत्कृष्ट चिंतन अने आदर्श कर्तृत्व. आ ज सिद्धांतोनुं समर्थन जुडी जुडी रीते विभिन्न मतोना माध्यमथी करवामां आवे छे.

जापाननो शिन्टो मत पवित्रताने धर्मनो मुख्य गुण माने छे. तेना मतानुसार निश्चलता पवित्रतानुं मुख्य अंग छे अने ईश्वरप्राप्तिनो राजमार्ग पण. आ मतानुसार दैनिक प्रार्थनानो भाव आ प्रमाणे नो छे - अमारी आंभो लले अपवित्र वस्तु जुये, परंतु हे लगवान ! अमारा हृदयमां अपवित्र वातोनु उदय न थाय. अमारा कान लले अपवित्र वातो सांभणे, परंतु अमारा हृदयमां अपवित्रतानो अनुभव न थाय, शिन्टो संप्रदाये पोतानी पूजाविधिमां पण मनोनिग्रह माटे ध्यान अने पवित्रता माटे मंत्रोच्चारनो समावेश कयो छे.

ताओ मत अनुसार ईश्वरने प्राप्त करवा माटे पवित्रता, विनय, संतोष, कडुणा, प्राणीमात्र प्रत्ये दया, सायुं ज्ञान अने आत्मसंयम मुख्य माध्यम छे. तेनी प्राप्ति माटे ध्यान अने प्राणायाम उपयोगी क्रियाओ छे.

## ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

ताओ मतमां लोको माटे संदेश आ रीते आपवामां आव्यो छे - "मारी पासे त्रण वस्तुओ छे, जेने हुं दृढतापूर्वक वागोणतो रहूं छुं - सौम्यता (दयाणुता), मितव्ययता तथा नम्रता".

कोन्ड्यूसियस चीननां सुविभ्यात धर्मप्रचारक तथा सिध्दपुरुष थर्ण गया छे. तेमणे पोताना दर्शनमां मुभ्यत्वे मानवजुवनने श्रेष्ठतम बनाववानी ज वात करे छे. तेओ मोटे भागे कहेता - "ज्यारे तमे ये ज जाणता नथी के मनुष्यनी सेवा केवी रीते करी शकय तो तमे देवोनी सेवा विशे कर्ण रीते पूछी शको छे ?" मानवमात्र माटे तेमनो अेकमात्र संदेशो अे हतो के वैयकितक उन्नति अे जुवननुं लक्ष्य नथी, ते तो सामाजिक उन्नतिनुं इण छे. तेमना मतानुसार पूर्ण धर्म अे छे के ज्यारे तमे बहार नीकणो त्यारे दरेकने अेम मानीने मणो के ते तमारो महान अतिथि छे. तेमनुं उपदेशामृत अे हतुं के सदाचार प्रत्ये निष्ठा अने सौंदर्य प्रत्ये अनुराग हृदयथी होवो जोर्णअे. मनुष्यनुं हृदय दर्पण जेवुं होवुं जोर्णअे, जेमां दरेक वस्तुनुं प्रतिबिंब पडवा छतां तेमां क्वांय मलिनता आवती नथी.

वेदांत दर्शन अे सिद्धांत प्रतिपादित करे छे के भूशतः आपुं विश्व अेक छे जेने आ परमार्थनुं दर्शन थर्ण जाय छे. तेनी दृष्टिमां स्वार्थ अने परमार्थमां कोर्ण लेद रहेतो नथी. आ दिव्य दृष्टिनी परिणति बधामां पोताने अने पोतानामां बधाने जोवा रुपे थाय छे. तेना हृदयमांथी 'आत्मवत् सर्वभूतेष' 'वसुधैव कुटुम्बकम्' नो अंतर्नाद गुंजवा लागे छे. ते व्यक्तिमांथी समष्टि तरङ्ग अग्रसर थर्ण जाय छे अने सहुना कल्याणमां पोतानुं कल्याण समजवा लागे छे. त्यारे ज तो वैदिक काणना ऋषिओअे आ घोषणा करी हती.

सर्व भवन्तु सुप्तिनः सर्व सन्तु निरामयः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥

जे व्यक्ति आटली परमार्थपरायण हशे ते अवश्य पवित्र हशे. तेनुं जुवन आदर्शवान हशे.



## ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

अथर्ववेद (3-30-१) नी उकित अहीं उल्लेखनीय छे.

सहृदयं सांमनस्यमविद्रेषं कृशोमि वः ।

अन्यो अन्यमभि ह्येत वत्सं जामिवाध्या ॥

अर्थात् - हे मनुष्यो ! में तमने सहृदयी, बुद्धिमान तथा दोषरहित बनाव्या छे. तमे अेकबीजा साथे, गाय पोताना नवजात वाछरडा साथे वर्ते छे अेवी रीते वर्तो.

लगवान बुध्दे पोताना ज ज्वनने उदाहरणरूपे रजू करीने लोकने पवित्र अने श्रेष्ठ ज्वन ज्ववानी प्रेरणा आपी हती. तेमना मतानुसार आर्ष सत्य यार छे.- दुःख, दुःखनुं कारण, दुःख निवारणनो उपाय तथा दुःखनुं निवारण. दुःख निवारण माटे तेओ तृष्णानो सर्वतोभावे त्याग करवानो संदेश आपे छे. तेमनुं कहेवुं हुतुं के राग समान आग नथी, द्वेष समानग्रह नथी, मोह समानमल नथी अने तृष्णा समान अगम नदी नथी. आथी बुध्द हमेशा सदाचरणने ज महत्व आपता हता. तेमणे कहयुं पण हुतुं के "धर्मग्रंथोना गमे तेटला पाठ करो, परंतु आणसने कारणे मनुष्य तदनुसार आचरण करतो नथी तो बीजानी गायो गणनार गोवाणनी जेम ते श्रमणत्व (ब्राह्मणत्व)नो लागी बनतो नथी.

जेम जैन मतनो सिद्धांत मुष्यत्वे अे छे के कोईपण कार्यमां सफलता प्राप्त करवा माटे त्रण बाबतो जरूरी छे - श्रद्धा, ज्ञान अने क्रिया. जैन शास्त्रोमां तेनो उल्लेख सम्यक दर्शन, सम्यग्ज्ञान अने सम्यकरित्र तरीके कर्यो छे.

गुरु नानकदेवे शीभधर्म रुपी ऋषिपरंपरानी शुभारंभ कर्यो हतो अने गुरु गोविंदसिंहज्ये तेने प्रगतिशील बनावी हती. तत्कालीन राष्ट्र समस्थाने जोतां गुरु गोविंदसिंहज्ये प्रत्येक अनुयायीओने राष्ट्र अने मानवता माटे पोतानी आहुति, पोतानुं बलिदान आपवानुं कहुं हुतुं. ते परंपराने आगण पण यालु राभवामाटे तेओअे प्रत्येक शीभने शास्त्रादपि शरादपिनो, -माणा अने भालो- साथे राभवानो, अनीति सामे हमेशा उज्ज्वलता रहेवानो संदेश आप्यो हतो.

## ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

पारसी धर्मना प्रवर्तक जरथुष्ट्र इता. तेमना द्वारा प्रतिपादित धर्मनीतिनां मुख्य यरण छे - हुमत अर्थात् उत्तम विचार, हुप्त अर्थात् उत्तम वचन अने हुश्वर्त अर्थात् उत्तम कार्य. ईश्वरनी साक्षी तथा प्रेरक रूप माटे तेमणे अग्निनो स्वीकार कर्यो अने अग्निनी जेम प्रभर, प्रकाशवान, उर्ध्वगामी तथा परोपकारी वृत्तिवाला बनवानी प्रेरणा आपी.

यहूदी मतनुं मूल दर्शन ऐकेश्वरवाद, ईश्वरनी पवित्रता तथा तेनी निराकारतामां समाविष्ट छे. दुनियाना बे मुख्य मत - ख्रिस्ती अने इस्लाम मत आमांथी ज अस्तित्वमां आव्या छे.

ख्रिस्ती मत अनुसार प्रेम ऐ ज परमेश्वर छे. प्रेम ज पूजा - आराधना छे, तेनी परिणति छे - 'परमात्मा ! मने मारो मार्ग बताव. मने मारा विशेषुं ज्ञान आप अने सत्यमार्गो मने यलाव. मारी मुकितनो आधार तुं ज छे. मारा ज्ञानयक्षु भोली नाभ. जेथी हुं तारी प्रेमपूर्ण आश्चर्यजनक कृतियोने समञ्ज शकुं.' ख्रिस्ती मतनो मूलधार तो स्वयं ईसुख्रिस्त छे, जेमणे मानवता अने आदर्श माटे पोतानुं बलिदान आपी दीधुं इतुं.

इस्लाम मतना संस्थापक इजरत महम्मद प्रत्येक मुसलमानने सदाचारी अने कर्तव्यपरायण बनवानो उपदेश जिवनभर आप्यो. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' नी जेम तेओ पण कहेता के दरेक मनुष्य अल्लाइनो भरादी छे. त्यारे ज तो तेओ इरीथी पण ऐम कहे छे के "आवो ! तमे अने अमे साथे मणीने आपणामां रहेली ऐकसरणी चीजोनो मेण करी लईऐ."

आ इकीकतोने आधारे धर्मना मूलभूत दर्शनमां क्वांय कोई लिन्नता जोवा मणती नथी. आज धार्मिक मान्यताओना नामे थता संघर्ष तथा भेयताएने अज्ञानताजन्य कृत्य ज कही शकय. सौथी मोटी विडंबना ऐ ज छे के लोको पोताना मतो तथा धर्मप्रवर्तकोना गुणगान गाय छे, परंतु तेना दर्शन तथा आदर्शोने पोताना जिवनमां उतारी शकता नथी.

## ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

जे चिंतनमां उत्कृष्टता, चरित्रमां आदर्शवादिता तथा व्यवहारमां शालीनततानो समन्वय करी शकाय तो धर्मनुं अेवुं स्वरूप प्रगटशे, जेमां विभेद नहि अेकत्व स्थापित हशे. संघर्ष नहि, परंतु सर्वत्र प्रेम, सहकार उदारता तथा समर्पणनुं साम्राज्य हशे.

तमाम मत पोतानुं स्वतंत्र अस्तित्व राषीने अेक सर्वमान्य सार्वभौमिक कार्यक्रम बनावीने हणीमणीने सभ्य अने सुसंस्कृत समाजना निर्माणमां संलग्न अने अे आजनी अनिवार्य आवश्यकता अे.

### ज्ञानयज्ञमां तमे पण आहुती आपो

समस्त संकटोनुं अेकमात्र कारण अे - मानवीय दुर्बुद्धि. जे उपायथी दुर्बुद्धिने दूर करी सदबुद्धी स्थपाय, ते ज मानवकल्याणनो तथा विश्वशांतिनो समाधानकारक मार्ग अे.

युगऋषि परमपूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजुअे वर्तमान युगनी समस्याना समाधान माटे हजरो पुस्तको लभ्यां अे. आ पुस्तकोने जन जनने वंचाववा ते आजनो युगधर्म अे. पुस्तक सूचि नीचेना सरनामे पत्र लषीने निःशुल्क मंगावो.

प्राप्तिस्थान : गायत्री ज्ञानपीठ, जूना वाडज, अमदावाड टे.नं. 096 2954922

प्रकाशन : युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-3

डोन : 0454-243012, डेकस : 0454-2430200